ORIGINAL RESEARCH PAPER

कुमाऊँ विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरूकता का अध्ययन

KEY WORDS:

प्रो• आर• एस• पथनी — प्रोफेसर शिक्षा संकाय कुमाऊँ विश्वविद्यालय एस• एस• जे• परिसर, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

हिमावती शोधार्थी — शिक्षा संकाय कुमाऊँ विश्वविद्यालय एस• एस• जे• परिसर, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

ABSTRACT

निर्देशन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग हैं इस शोध का मुख्य उद्देश्य कुमाऊँ विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरुकता का अध्ययन करना था। इस हेतु कुमाऊँ विष्वविद्यालय नैनीताल के विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को चयनित किया गया है। प्रदत्त संकलन हेतु प्रो• आर• एस• पथनी एवं हिमावती द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण "निर्देषन एवं परामर्श जागरुकता मापनी" का उपयोग किया गया। सभी चरों के लिए विभिन्न आयामों के सन्दर्भ में टी–मान ज्ञात किया गया। शोध कार्य के परिणाम थे–1. पुरुष और महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। 2.ग्रामीण और शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरुकता मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।3. सामान्य और अन्य जाति शिक्षक प्रषिक्षणार्थियों के मध्य निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरुकता मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। 3. विज्ञान वर्ग और कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य निर्देशनएवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरुकता मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य को स्वयं का विकास करने में अपनी बुद्धि व विवेक के साथ दूसरों की सहायता भी लेनी पड़ती है। जब व्यक्ति विकास पथ पर अग्रसर होने के लिए दूसरे व्यक्ति के अनुभव, बुद्धि व विवेक की सहायता लेता है तो दूसरे व्यक्ति द्वारा इस प्रकार की गयी सहायता निर्देशन कहलाती है। निर्देशन प्रक्रिया में निर्देशक किसी व्यक्ति के अन्दर ज्ञान का विकास नहीं करता अपितु व्यक्ति के अन्दर पहले से उपस्थित ज्ञान को एक सही निर्देशन देकर उसे उसके लक्ष्य तक पहुँचाता है। इस प्रकार निर्देशन व्यक्ति को शैक्षिक, व्यावसायिक, सांवेगिक तथा मानसिक समस्याओं के समाधान हेतु योग्य बनाता है इसके साथ ही विभिन्न अवस्थाओं और अवसरों पर विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान करने हेतु निर्देशन की आवश्यकता है (राय और अस्थाना, 2012)क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर द्वारा 16–18 नवम्बर 2016 में 'भारत में निर्देशन एवं परामर्श सेवा : स्थिति, प्रवृत्ति व नवाचार' पर सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें निर्देशन एवं परामर्श को शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में स्वीकार करने का सुझाव दिया गया (कुमार, 2016)। मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा 2018–19 में शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार करने तथा शिक्षक शिक्षा संस्थानों सुदृढ़ करने हेतु 'समग्र शिक्षा' योजना का शुभारम्भ किया गया। यह योजना केन्द्र द्वारा तीन योजनाओं–सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान तथा शिक्षक शिक्षा योजना का विलय करके बनाई गयी है (यादव,2000)। इसी क्रम में मन्त्रालय द्वारा उच्च शिक्षा में युवाओं के प्रशिक्षण एवं कौशल विकास के लिए श्रेयस (स्कीम फॉर हायर एजुकेशन यूथ इन अप्रेंटिश एण्ड स्किल) योजना की शुरूआत की गयी जिसका मुख्य उद्देश्य नए स्नातकों को विषेश उद्योग से सम्बन्धित प्रशिक्षण के अवसर प्राप्त हो सके (पाण्डेय,2019) ।सिंह (2015) ने इसी क्रम में उच्च शिक्षा संस्थानों का मुख्य उद्देश्य अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अकादमिक प्रणाली के साथ व्यावसायिक अभिमुखीकरण तथा समग्र विकास करना सुनिश्चित किया।

एक अध्यापक ही विद्यालय में वह व्यक्ति होता है जो छात्र के विषय में सर्वाधिक जानता है। वह छात्र को कक्षा में और कक्षा के बाहर भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में देखता है। कक्षा परामर्शदाता के रूप में अध्यापक को प्रत्येक छात्र में व्यक्तिगत, सामाजिक व शैक्षिक गुणों को विकसित करने तथा एक व्यावसायिक निर्देशक के रूप में अध्यापक के पास उनकी व्यावसायिक के साथ छात्रों की सहायता करने के अवसर प्राप्त होते हैं। इसलिए यह अनुभव किया गया है कि निर्देशन कार्यक्रम में विद्यालय के सभी शिक्षक पर्याप्त सहायता दे सकते हैं जब वह संवेदनशील होकर निर्देशन प्रदान करने का उत्तरदायित्व लें जिससे वह अपने छात्र को बेहतर ढंग से समझ सकें।

उपरोक्त विवरण इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्शित करते हैं कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शोधकर्ता द्वारा इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरूकता को जानने का प्रयास किया गया।

शोध से संबंधित पूर्व अध्ययन खरे (2000) ने किशोरों के बीच उनकी लिंग, जाति और शैक्षिक वर्ग के सम्बन्ध में निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन किया। न्यादर्श में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 480 विद्यार्थियों (240 छात्र, 240 छात्राएं) को सम्मिलित किया तथा ग्रेवाल निर्देशन आवश्यकता सूची के प्रयोग से आंकड़ों को संग्रहित किया गया। विष्लेशणोंपरान्त इस तथ्य को स्पष्ट किया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्रों की अपेक्षा छात्राओं को भौतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक, व्यावसायिक तथा जीवन के सभी पक्षों में निर्देशन की अधिक आवश्यकता थी एवं कला वर्ग की तुलना में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को शैक्षिक निर्देशन अधिक आवश्यकता थी। सिन्हा (2015) द्वारा कक्षा 10, कक्षा 11 व कक्षा 12 में अध्ययनरत् 648 छात्रों व उनके 648 अभिभावकों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित करते हुए किशोरों व अभिभावकों के बीच अकादमिक तनाव : निर्देशन की आवश्यकता के सन्दर्भ में शोध किया गया। निष्कर्ष से इस तथ्य की जानकारी प्राप्त हुई कि अधिकतम संख्या (40•74 प्रतिशत) में अभिभावकों को शैक्षिक मुद्दे जैसे की राष्ट्रीय चयन, विषय संयोजन, विभिन्न विषयों का क्षेत्र, कोचिंग संस्थानों का चयन, अकादमिक तनाव तथा छात्र द्वारा प्रवेश प्रक्रिया को समझना आदि के लिए निर्देशन की आवश्यकता है। जबकि 35•03 प्रतिशत अभिभावकों को औसत निर्देशन की आवश्यकता अनुभव हुई। इसके साथ ही 22•22 प्रतिशत अभिभावकों को अपने बालकों के लिए अध्ययन से सम्बन्धित निर्देशन के किसी भी प्रकार की आवश्यकता नहीं थी।

परिकल्पनाएँ

1 निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति पुरुष और महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2 निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति ग्रामीण और शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3 निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति सामान्य जाति और अन्य जातियों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध अध्ययन का सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध कार्य में कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल में अध्ययनरत् शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
2. शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में मात्र बी•एड• में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु कुमाऊँ मण्डल से 810 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों से शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन असमानुपाती स्तरित यादृच्छिक निदर्शन विधि से किया गया।

उपकरण

इस शोध अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु प्रो• आर एस पथनी और हिमावती द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण "निर्देशन एवं परामर्श जागरुकता मापनी" का उपयोग किया गया।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विष्लेशण एवं व्याख्या

1. पुरूष और महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका 1

श्लंग	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	't' मूल्य	सार्थकता स्तर (0.05)
पुरूष	203	340.76	25.98	**0.24**	असार्थक
महिला	607	340.26	25.82		

तालिका 1 में प्रस्तुत आंकड़ों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि पुरूष व महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया (ज मूल्य–0.24)। जो अन्तर दिखाई दे रहा है, वह संयोगजन्य है। अतः दोनो न्यादर्श समूह निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरूकता में लगभग समान पाये गये। वर्तमान समय में पुरूष और महिला प्रशिक्षणार्थियों को समान शैक्षिक सुविधायें तथा उन्नति के समान अवसर उपलब्ध हैं। इसलिए यह पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में कोई सार्थक अन्तर न होने का एक कारण हो सकता है।

2. ग्रामीण और शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

निवास स्थान	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	't' मूल्य	सार्थकता स्तर (0.05)
शहरी	399	340.53	26.95	**0.16**	असार्थक
ग्रामीण	411	340.24	24.75		

तालिका 2 में प्रस्तुत आंकड़ों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण और शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया (ज मूल्य–0.16)। जो अन्तर दिखाई दे रहा है, वह संयोगजन्य है। अतः दोनो न्यादर्श समूह निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरूकता में लगभग समान पाये गये। शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का सामाजिक एवं चिन्तन स्तर समान होना, इनके निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति समान रूप से जागरूक होने का एक कारण हो सकता है।

3. सामान्य जाति और अन्य जाति के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका 3

श्रेणी	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	't' मूल्य	सार्थकता स्तर (0.05)
सामान्य	514	340.07	25.69	**–0.47**	असार्थक
अन्य	296	340.92	26.15		

तालिका 3 में आंकड़ों का सांख्यिकीय विष्लेशण, माध्य, मानक विचलन तथा 'ज' मूल्य का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका में प्रस्तुत आंकड़ों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति और अन्य जाति के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है(ज मूल्य–0.47)। जो अन्तर दिखाई दे रहा है, वह संयोगजन्य है। अतः दोनो न्यादर्श समूह निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरूकता में लगभग समान पाये गये। इसका कारण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा आधुनिक तकनीकों (इन्टरनैट,सेमिनार,परिभ्रमण इत्यादि) द्वारा जानकारी प्राप्त करना हो सकता है।

निष्कर्ष

तालिका 1 के अनुसार पुरुष और महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।दोनो न्यादर्श समूह निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति मे समान पाये गये। अतः निराकरणीय परिकल्पना स्वीकृत होती है।

तालिका 2 के अनुसार ग्रामीण और शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरुकता मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।दोनो न्यादर्श समूह निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरुकता मे समान पाये गये। अतः निराकरणीय परिकल्पना स्वीकृत होती है

तालिका 3 के अनुसार सामान्य और अन्य जाति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम के प्रति जागरुकता मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। अतः निराकरणीय परिकल्पना स्वीकृत होती है।

शैक्षिक महत्व

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रिया–कलापों में प्रतिभाग करने के लिए भी प्रेरित किया जाना चाहिए।
2. शैक्षिक रेडियों एवं शैक्षिक दूरदर्शन के माध्यम से विभिन्न व्यवसायों की प्रकृति के अनुसार आवश्यक अर्हता एवं योग्यता सम्बन्धी जानकारियों से सम्बन्धित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाना चाहिए।
3. कैरियर वार्ता,प्रदर्शनी और पठन सामग्री के माध्यम से विभिन्न शैक्षिक पाठ्यक्रमों,विभिन्न व्यवसायों और विभिन्न संस्थानों के विशय में सूचना प्राप्त की जा सकती है।

सन्दर्भ सूची

अग्रवाल,रश्मि(2012).शैक्षिक एवम् व्यवसायिक निर्देशन(प्राथमिक स्तर पर).शिप्रा पब्लिकेशन्स,दिल्ली.
असर रिपोर्ट (2019).शिक्षा की वार्शिक स्थिति रिपोट 'प्रारम्भिक वर्श'. नई दिल्ली. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 2005,राश्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा, नई दिल्ली.
कुमार,ए.(2016).नेशनल कान्फ्रेस ऑन गाइडेंस एण्ड काउसलिंग इन इण्डिया :स्टेटस,टेंडस,प्रैक्टिसेस एण्ड इन्नोवेशंस :ए लाइवलीहुड प्लानिंग.वॉल्यूम 5,न. 1,पृ. 67–69.
काले,सविता (1988).ए सर्वे ऑफ इम्लीमेंटेशन ऑफ वोकेशनल एजुकेशन एट हायर सेकेंडरी स्टेज इन महाराष्ट्र स्टेट.पी–एच.डी.शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र),सावित्रीबाई फुले पुणे यूनिवर्सिटी,महाराष्ट्र.

खरे,श्रुति (2000).ए स्टडी ऑफ नीड फॉर गाइडेंस अमंग एडोलैसैंट्स इन रिलेशन टू दियर सेक्स कास्ट एण्ड एजुकेशनल स्ट्रीम. पी–एच.डी.शोध प्रबन्ध(मनोविज्ञान),पं रविशंकर शुक्ला यूनिवर्सिटी,छत्तीसगढ़.

गुप्ता,एस.पी,और अलका गुप्ता (2011).आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन.शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद.

पाण्डेय,जे.के.(2019).उच्च शिक्षाः संभावनाएं और चुनौतियाँ.योजना.सितम्बर 2019,पृ.61.
पुरोहित,पी.पी. (2016).श्रीमद्भगवद्गीता में निहित तत्वों का वर्तमान निर्देशन एवं परामर्श प्रणाली में उपयोगिता का एक विवेचनात्मक अध्ययन. पी–एच.डी. शोध प्रबंध (शिक्षाशास्त्र), कुमाऊँ विश्वविद्यालय,नैनीताल.

यादव,एस.के. (2020).ग्रामीण शिक्षा और बजट.कुरुक्षेत्र.मार्च 2020,पृ.52.
राय,ए. और मधु अस्थाना (2012).निर्देशन एवं परामर्शन.मोतीलाल बनारसीदास,आगरा.
सेन,एस.(2012).ए स्टडी ऑफ द ऑक्यूपेशनल स्ट्रेस ऑफ स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू दियर स्ट्रेस रिएक्शन एण्ड मैनिफेस्ट नीड फॉर काउंसलिंग.पी–एच.डी.शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता.

सिन्हा,चंचल (2015).एकेडमिक स्ट्रेस अमंग एडोलैसैंट्स एण्ड पेरेंट्स गाइडेंस नीड्स.पी–एच. डी.शोध प्रबन्ध(होम साइंस),बनस्थली यूनिवर्सिटी,राजस्थान.

सिंह,ए.के. (2014).मनोविज्ञान तथा शिक्षा में शोध विधियाँ. मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली.
सिंह,ए.पी.(2015).उच्च शिक्षा संस्थाओं में अध्ययनरत् छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति का उनके वैयक्तिक एवं पारिवारिक पृश्ठभूमि के सन्दर्भ में अध्ययन. पी–एच.डी. शोध प्रबंध(शिक्षाशास्त्र),कुमाऊँ विश्वविद्यालय,नैनीताल.